वार्तालाप 425, टी.पी.जी. (आं.प्र.), ता: 23.10.07
Disc.CD No.425, dated 23.10.07 at T.P.Gudem (Andhra Pradesh)

समय – 04.02
जिज्ञासू – बाबा, वो साई की डेफिनेशन दिया है ना बाप ने। जो रात को दिन बनाने वाला ही सच्चा साई वो हैं। शिवबाप। अभी जो शिर्डी साई जो हैं ना उनका गाँव–गाँव में मंदिर है।
बाबा – साई बाबा का।
जिज्ञासू – शिर्डी साई बाबा जो हैं ना उनका गाँव–गाँव में मंदिर है। बड़ा भक्त है। क्या वास्तव में ये उसको लागू करना है ना शिव बाबा को; क्योंकि सच्चा साई तो शिवबाबा है।
बाबा – भक्तिमार्ग में गांधीजी हुए। तो ज्ञान मार्ग में गांधीजी नहीं हुए क्या? ऐसे ही भक्तिमार्ग में जो भी पार्टधारी हैं, वो ज्ञान मार्ग में भी हैं, देखे जा सकते हैं।
जिज्ञासू – गायन तो उनका है ना।
बाबा – हाँ जी। गांधीजी प्रैक्टिकल में नहीं हुए? गांधीजी भी प्रैक्टिकल में हुए। वो हद के गांधीजी और उसी तरीके से टैली करने के लिए ब्राह्मणों की दुनियाँ में बेहद का गांधीजी भी है। जो बातें हद के गांधीजी के ऊपर लागू होती हैं वही बातें बेहद के गांधीजी के ऊपर भी लागू हुई।

Time: 04.02
Student: Baba, the Father has given the definition of *Sai*. The true *Sai* is the one who transforms night into day. The Father Shiv. Now there are temples of *Shirdi Sai* (*Shirdi* – a place in India) in every village.
Baba: Of Sai Baba.
Student: There are temples of *Shirdi Sai Baba* in every village. There are a lot of devotees. Should we actually apply it to him or to Shivbaba because true *Sai* is indeed Shivbaba.
Baba: There was Gandhiji in the path of *bhakti* (devotion). So, was there not a Gandhiji in the path of knowledge? Similarly, all the actors of the path of *bhakti* exist in the path of knowledge as well; they can be seen (in the path of knowledge).
Student: They are famous, aren't they?
Baba: Yes. Didn't Gandhiji exist in reality? Gandhiji also existed in reality. He was Gandhiji in a limited sense and in the same way, in order to tally; there is a Gandhiji in an unlimited sense in the world of Brahmins as well. Whatever is applicable to the limited Gandhiji is also applicable to the unlimited Gandhiji.

समय – 05.46
जिज्ञासू – बाबा, ये जगन्नाथ टेम्पल में देवताओं को नग्न मूर्ति दिखाते हैं ना। उनको निकालने के लिए गवर्मेन्ट को भी इतना ताकत नहीं है मुरली में ऐसा प्वाइन्ट आया। मतलब उनको तो ज्ञान नहीं है ना कि देवतायें, वो निर्विकारी है। उसको निकालने के लिए क्यों उनको ताकत नहीं हैं?
बाबा – एक व्यक्ति सुधरना चाहता है और सुधरने के लिए पुरूषार्थ करता है। बीच में गिर जाता है, फिर उठके पुरूषार्थ करता है। तो उसको गोली मार देनी चाहिए या पुरूषार्थ करने देना चाहिए?
जिज्ञासू – पुरूषार्थ करने देना चाहिए।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 05.46
Student: Baba, the naked idols of deities are shown in the temple of *Jagannath*. A point has been mentioned in the *Murli* that even the Government does not have the power to remove them. I mean to say they don't have the knowledge, that those idols of deities are viceless, do they? Why don't they have the power to remove them?
Baba: A person wants to reform and he does *purusharth* (special effort for the soul) to reform himself. In the course of those efforts he falls down; he gets up and does *purusharth* again. So, should he be shot dead or should he be allowed to do *purusharth*?
Student: He should be allowed to do *purusharth*.

बाबा – तो ऐसे ही है जो मूर्तियाँ दिखाई गई है, नंगी मूर्तियाँ विकारी स्टेज में वो मन्दिर के बाहर हैं या मंदिर के अंदर हैं? बाहर हैं। इसका मतलब सम्पन्न स्टेज नहीं हैं। पुरूषार्थी हैं; लेकिन पुरूषार्थ का भी तरीका बताया है। बेकायदे पुरूषार्थ नहीं होना चाहिए। समाज के कायदे–कानून होते हैं। ईश्वरीय कायदे–कानून होते हैं। सरकारी कायदे–कानून होते हैं। सब प्रकार के कायदे–कानून में बंधते हुए ईश्वरीय बताया हुआ पुरूषार्थ करना चाहिए नहीं तो सेवा के बदले डिससर्विस हो जाती है। ब्राह्मण परिवार की आँख में धूल झोंकना, सरकार की आँखों में धूल झोंकना, और समाज की आँखों में धूल झोंकना और भगवान को सच्चा पोतामेल न देकर के ये भी धूल झोंकना भगवान की आँखों में, इससे थोड़े समय के लिए ऐसे समझा जा सकता है कि हम उन्नति कर रहे हैं; लेकिन बाद में पता चलता है कि हमने तो बेकायदे काम किया, ठीक नहीं किया। एकदम अवस्था नीचे आ जावेगी।

Baba: In the same way, the idols that have been shown, the naked idols in a vicious stage; are they outside the temple or inside it? They are outside. It means that their stage is not complete. They are *purusharthi* (makers of special effort for the soul). But even for making *purusharth* a procedure has been mentioned. The *purusharth* should not be against the rules. There are rules and regulations of the society. There are Godly rules and regulations. There are rules and regulations of the government. We should do *purusharth* as said by God while following all kinds of rules and regulations. Otherwise, instead of service we do disservice. To deceive the Brahmin family, to deceive the Government, to deceive the society and to deceive God by not giving the true *potamail* may give a false impression for a short time that we are progressing, but later on we come to know that we have acted against the rules. We did not act properly. The stage will come down completely.

समय – 8.40
जिज्ञासू – बाबा, नौधा भक्ति। नौ प्रकार की भक्ति के बारे में।
बाबा – नौधा भक्ति हैं तो नौधा ज्ञान भी है और नौधा याद भी है। 'धा' माना प्रकार। ब्रह्मा के तन में याद किया ये भी एक प्रकार है। उससे पहले ज्योतिबिंदु को याद किया ये भी एक प्रकार। उससे पहले लाइट के लिंग को याद करते थे वो भी एक प्रकार और अलग–अलग धर्मों के जो भी सरपरस्त हैं उनमें भगवान मानकर के उनको याद करेंगे वो भी उनका प्रकार; परंतु असली याद तो एक ही है; क्योंकि एक ही रूप है बाप का, एक ही रूप है टीचर का और एक ही रूप है सदगुरू का।

Time: 8.40
Student: Baba, *naudha bhakti*. Tell us about the nine kinds of *bhakti*.
Baba: When there are nine kinds of *bhakti*, there are nine kinds of knowledge as well as nine kinds of remembrance. *'Dha'* means types. We remembered (the incorporeal) in Brahma's body, this is also a kind (of remembrance). Before that we remembered the point of light; that

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

is also a kind (of remembrance). Before that we used to remember the *ling* of light. That is also a kind (of remembrance), and if you remember God by considering Him to be present in the heads of the different religions, then that is also a kind (of remembrance). But the true remembrance is only one because there is only one form of the Father; there is only one form of the Teacher and only one form of the *Sadguru*.

समय – 12.01
जिज्ञासू – बाबा, दादी जी ने शरीर छोड़ दिया ना।
बाबा – हांजी।
जिज्ञासू – वो कई बच्चों को बाप से वंचित किया सच्च जानते हुये भी। तो उसको जरूर दंड मिलना चाहिये ना, ये तो जैसे बड़ा पाप है।
बाबा – दण्ड यें भटकना,` चारों तरफ दुनियाँ में भटकना। जब सूक्ष्म शरीर मिलता है तो फट से उनको असली शरीर थोड़े ही मिल जाएगा।
जिज्ञासू – लेकिन उनको गर्भ जेल ज़रूर अनुभव होना चाहिए ना। वो भी एक प्रकार का दंड है ना।
बाबा – गर्भ जेल का दंड नहीं है; लेकिन उससे भी बड़ा दंड होता है ज्ञान गर्भ। भीख माँगेंगे मुसलमान। वो अपन को बादशाह समझते थे और उनको भीख माँगनी पड़े तो कितना बड़ा दंड हो गया।

Time: 12.01
Student: Baba, *Dadiji* left her body, didn't she?
Baba: Yes.
Student: She prevented many children from meeting the Father despite knowing the truth. So, she should definitely receive punishment, shouldn't she? This is like a big sin.
Baba: The punishment is this wandering, wandering all over the world. When they get a subtle body, they will not get the actual body immediately.
Student: But they should experience the jail-like womb without fail, shouldn't they? That is also a kind of punishment, isn't it?
Baba: Not the punishment of the jail-like womb but the womb of knowledge is a bigger punishment than that. The Muslims will seek alms. They used to consider themselves to be emperors and if they have to seek alms, then it is such a big punishment.

जिज्ञासू – उनको तो शरीर ही नहीं है ना। तो वो भीख कैसे माँगेंगे?
बाबा – माना सूक्ष्म शरीरधारी प्रवेश नहीं करता है? सजा खाऐंगे तो साकार शरीर धारण कराके सजा दूँगा या संकल्पों में ही खतम हो जाएगी सजा?
जिज्ञासू – साकार शरीर से।
बाबा – तो कैसे साकार शरीर धारण करेंगे?
जिज्ञासू – प्रवेश करके।
बाबा – प्रवेश करेंगे, साकार शरीर धारण करेंगे। जैसे कोई भूत–प्रेत आते हैं तो औलियों के पास ले जाते हैं, तांत्रिकों के पास। वो उनको बांध करके पिटाई करते हैं। तो सजा खाती है कौनसी आत्मा?
जिज्ञासू – शरीरधारी आत्मा।
बाबा – शरीरधारी नहीं खाती है। उसको बांध लेते हैं वो निकल नहीं सकती।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: They do not have a body at all. How will they seek alms?
Baba: Does it mean that subtle bodied soul does not enter (anyone)? They will suffer punishments; so will I punish them by making them assume a corporeal body or will the punishments be over through the thoughts only?
Student: Through the corporeal body.
Baba: So, how will they assume a corporeal body?
Student: By entering.
Baba: They will enter; they will assume a corporeal body. For example, when some ghosts or spirits enter (someone), they are taken to the *Aulias* (saints), to the *Tantriks* (a person who knows tantric knowledge). They tie them up and beat them. So, which soul suffers the punishment?
Student: The soul of the bodily being.
Baba: The bodily being doesn't suffer (punishment). It (i.e. the soul that has entered that person) is tied up. It cannot escape.

समय – 33.03
जिज्ञासू – बाबा, ये उत्तर भारत और दक्षिण भारत कहते हैं ना। दक्षिण भारत वाले उत्तर भारत वाले कहते हैं ना बाप।
बाबा – दक्षिण भारत वाले और उत्तर भारत वाले ये आत्मा होती है या शरीर होता है?
जिज्ञासू – शरीर।
बाबा – तो जो आत्मिक स्थिती वाले होंगे उनके ऊपर तो कोई असर नहीं पड़ता है कि हम दक्षिण भारत के हैं या उत्तर भारत के हैं; क्योंकि अपने को आत्मा समझने वाला ये जानता है कि भले इस आखरी जन्म में हमने दक्षिण भारत में जन्म लिया; लेकिन इससे जो 83 जन्म हुए है वो तो मेरे हो सकते हैं उत्तर भारत में कि नहीं हो सकते? हो सकते हैं। तो मैं आत्मा उत्तर भारतवासी हूँ या दक्षिण भारतवासी हूँ? उत्तर भारत की हूँ।
जिज्ञासू – इसलिए लैंगवेज (भाषा) भी वो समझ सकती है बाप से जो आती है। हिंदी लैंगवेज।

Time: 33.03
Student: Baba, people talk of North India and South India, don't they? The Father talks about the South Indians and the North Indians, doesn't He?
Baba: Is it the soul or the body that is South Indian and North Indian?
Student: The body.
Baba: So, for those who are soul conscious, it does not matter whether they belong to South India or to North India because the one who considers himself to be a soul knows: I may have taken birth in South India in this birth, but in the past 83 births, I could have taken birth in North India or not? I could have. So, am I, as a soul, a north Indian or a south Indian? I belong to North India.
Student: That is why it (the soul) can also understand the language that is spoken by the Father, the Hindi language.

बाबा – आत्मा उत्तर भारत, दक्षिण भारत, अमेरीका, या इंग्लैण्ड की नहीं होती है। ये देह होती है। देह के ऊपर नाम पड़ता है। देह का रूप होता है। आत्मा जो (नहीं) समझते हैं और भेद पैदा करते हैं ये दक्षिण भारत का है उत्तर भारत का है। वो देहभान में आकरके कहते हैं कि आत्मिक स्थिती में होकर बोलते हैं?
जिज्ञासू – देहभान में।
बाबा– देह को देखकर कहते हैं। चमार हैं।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: A soul does not belong to North India, South India, America or England. This body belongs (to those countries). The name is based on the body. A body has a form. Those who (don't) consider themselves to be souls and discriminate (thinking) , this person belongs to South India and (this person belongs to) North India; do they speak in body consciousness or in soul consciousness?
Student: In body consciousness.
Baba: They speak looking at the body. They are *chamaars* (in literal sense it refers to a lower caste among Hindus that practices the profession of making leather, but here it refers to the souls that are body conscious).

जिज्ञासू – लेकिन बाबा, बाप को पहचानने वाले विदेशी लोग हैं, दक्षिण भारत है। ऐसा कहते हैं ना बाप?
बाबा – बताने के लिए सिर्फ। आत्मा विदेशी नहीं है। मान लो कोई विदेश का है। अभी लास्ट में उसने ज्ञान लिया है एड्वान्स और ये दक्षिण भारत में ढेर बैठे हुए हैं देशी। उनको देशी कहेंगे या विदेशी कहेंगे? देशी हैं। वो विदेशी आकरके एक–दो महीने के अंदर हिंदी बोलना शुरू कर देता है। छः महीने के अंदर भाषण देना शुरू कर देता है, लेटर लिखना शुरू कर देता है, ई–मेल देना शुरू कर देता है, ट्रान्सलेशन करना शुरू कर देता है। अब उसकी आत्मा भारत की है या विदेशी है?
जिज्ञासू – भारत की।
बाबा – जो भारत के अंदर रहने वाले इतना मेहनत करते हैं, चाहते हैं हम हिंदी सीखें वो नहीं सीख पाते और उसमें लगन है वो लगन ये साबित करती है कि ये पक्का भारतवासी आत्मा है।

Student: But Baba, those who recognize the Father are foreigners, South Indians. The Father says so, doesn't He?
Baba: It is just for the sake of narration. A soul is not foreigner *(videshi)*. Suppose someone belongs to a foreign country. He has obtained the advance knowledge now in the last period and so many Indians belonging to south India are sitting (here). Will they (South Indians) be called Indians or foreigners? They are Indians. That foreigner comes and starts speaking Hindi within a month or two. He starts giving lectures within six months, starts writing letters (in Hindi), starts sending e-mails (in Hindi), starts doing translation (from Hindi to English). Well, does his soul belong to India or to a foreign country?
Student: It belongs to India.
Baba: Those who live in India and work so hard, who wish that they should learn Hindi , are unable to learn and he (the foreigner) has the devotion (to learn Hindi); that devotion proves that he is a firm Indian soul.

जिज्ञासू – उत्तर भारत वाले दक्षिण भारत में आते हैं तो?
बाबा– विदेशी बन जाते हैं।
जिज्ञासू – और भाषा नहीं सीखते तो?
बाबा – दक्षिण भारत की भाषा नहीं सीखते हैं?
जिज्ञासू – उनको आता ही नहीं है। वो नहीं सीखते तो?
बाबा – नहीं सिखते है वो तो, कोई बाबा का डायरेक्शन थोड़े ही है कि भाषाऐं नहीं सीखो। बाप तो कहते हैं सब भाषाऐं सीखो।
जिज्ञासू – आता ही नहीं हो तो?
बाबा – आता ही नहीं तो दक्षिण भारत में आऐंगे काहे के लिए?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: What if the North Indians come to South India?
Baba: They become foreigners.
Student: And what if they do not learn the language?
Baba: If they do not learn the language of south India?
Student: They do not know at all. What if they do not learn?
Baba: If they do not learn, it is not Baba's direction that you shouldn't learn (other) languages? The Father says, learn all the languages.
Student: What if they do not know at all?
Baba: If they do not know at all, why will they come to south India?

जिज्ञासू– बिना सीखे कोई भाषा वहाँ रह–रहकर के आती रहे तो उसको क्या कहा जाएगा?
बाबा – समाज बदलने से, सोसायटी मूव करने से कोई भी भाषा आती है; लेकिन पूर्वजन्मों के संस्कार से भी भाषा आती है।
जिज्ञासू – कहा जाता है कि यहाँ की भाषा सीख लिया माना ब्रॉड ड्रामा में यहाँ ही आके जन्म लेंगे।
बाबा – ये कोई बात नहीं होती। जब बाबा ने डायरेक्शन दिया है सब तरह की भाषायें सीखो। सारी दुनियाँ की तुमको सेवायें करनी है तो सीखो।
जिज्ञासू – बिना सीखे ऑटोमेटिकली चार–पांच लैंगवेज आती है ना।
बाबा – हाँ, कोई–कोई ऐसे होते हैं। पांच–पांच, छः–छः लैंगवेज बोलते हैं। तो उनके भी अपने पूर्वजन्मों के हिसाब–किताब हैं जो उन्होंने पांच–छः लैंगवेज सीख ली। जरूर सोसायटी मूव की होगी। सोसायटी मूव करना ये भी तो पूर्वजन्मों के संस्कारों के आधार पर है।

Student: If someone knows a language by living at that particular place without (formally) learning it, then what will be said about it?
Baba: Anyone can learn any language by moving to a different society, but someone also knows a language because of the *sanskars* of the previous births.
Student: It is said that if someone has learnt the language of this place (South India), then he will come and take birth just here in the broad drama.
Baba: This is not true. When Baba has given the direction that you should learn all kinds of languages; if you wish to serve the entire world, learn (different languages).
Student: Some know four-five languages automatically without learning, don't they?
Baba: Yes, there are some such people. They speak five, six languages. So, they too have such *karmic* accounts of their previous births that they learnt five-six languages. They must have certainly moved (to a different) society. Moving from one society to another is also on the basis of the previous births.

जिज्ञासू – उत्तर भारत वाले मान लो दक्षिण भारत में आए।
बाबा– आए तो पूर्वजन्मों के हिसाब से आए या वैसे ही आ गए?
जिज्ञासू – उत्तर भारत वाले दक्षिण में आए तो वो लोग विदेशी हो गए क्या?
बाबा – नहीं कोई ज़रूरी नहीं है हो जाए और हो भी सकते है। कोई आया और वहीं के रंग में रंग गया। अपनी संस्कृति को भूल गया और उसी ग्रुप में रंग करके सारा ही परिवर्तन हो गया तो क्या कहेंगे? विदेशी है और क्या। विदेशी और स्वदेशी की सबसे बड़ी पहचान क्या?
जिज्ञासू – स्वस्थिती में रहने वाले।
बाबा – हाँ। जो व्यभिचार में जाए सो विदेशी, जाना पसंद करता हो सो विदेशी और जो स्वस्थिती में रहना पसंद करता हो और अव्यभिचारी बनना पसंद करता हो, व्यभिचार से जैसे

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

घृणा आती हो सो है स्वदेशी। जितने भी विदेशी धर्म हैं वो सब व्यभिचारी हैं। भारतीय धर्म हैं वो अव्यभिचारी, है नम्बरवार।

Student: Suppose people from north India came to south India.
Baba: If they came (to south India) did they come on the basis of (the *karmic* accounts of) the previous births or did they come here simply?
Student: If the north Indians came to south (India), then do they (north Indians) become foreigners?
Baba: No, it is not necessary that they become (south Indians); and they can become as well. If someone came and was coloured just by that place, forgot his culture and becomes coloured by that very group and transforms entirely; then, what will be said? He is a foreigner *(videshi),* what else? What is the biggest indication of a *videshi* and *swadeshi* (Indian)?
Student: Those who live in the stage of self *(swasthiti).*
Baba: Yes. The one who indulges in adultery (*vyabhichaar*) is a foreigner; the one who likes to (indulge in adultery) is a foreigner and the one who likes to be in the stage of self and likes to become unadulterous (*avyabhichaari*); it is as if he hates adultery, is *swadeshi*. All the foreign religions are adulterous. Indian religions are indeed unadulterous, but number wise.

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info